विज्ञान

मेरे मन की बनावट मेरे मन के अनुभवों को पृथक् २ रहने नहीं देती । मुझ में स्वाभाविक इच्छा है कि इन अनुभवों को सम्मिलित करूं, इनके सम्बन्धों को जानूं, इन मणकों को एक सूत्र में परोकर एक माला तयार करूं । यह इच्छा स्वाभाविक है और कोई मनुष्य इससे शून्य नहीं हां और शक्तियों की भान्ति इसके सम्बन्ध में भी मनुष्यों में भेद है । हमारा समग्र जीवन अपने अनुभवों को संगठित करने में व्यय होता है । इस क्रम से पूर्व जगत् एक गड़बड़ की अवस्था में होता है हम इस अवस्था की जगह व्यवस्था उत्पन्न करते हैं । जब हम कई अनुभवों को एक सूत्र में परोकर इन्हें व्यवस्था में करते हैं तो हमारा ज्ञान वैज्ञानिक ज्ञान कहलाता है । जैसा कि मैं देखता हूं कि आम वृक्ष से पृथिवी पर गिरते हैं, देखता हूं कि पृथिवि सूर्य के गिर्द घूमती है, मैं देखता हूं कि समुद्र में कहीं जल ऊपर को उठते हैं और कहीं साधारण तल से नीचे चले जाते हैं प्रकाश की किरणें सीधी लकीर में क्रिया करती हैं जब तक मेरे अनुभव परस्पर असम्बद्ध (असम्बन्ध) हैं मेरा ज्ञान वैज्ञानिक ज्ञान नहीं परन्तु जब मैं जान लेता हूं कि यह अवस्थायें एक ही नियम गुरुत्व आकर्षण के रूप हैं तो मेरा ज्ञान साइन्टिफिक ज्ञान है । अब मेरे अनुभव पृथक् और स्वतन्त्र नहीं किन्तु एक दूसरे के साथ बान्धे गये हैं इसी प्रकार जब मैं शब्द सुनता हूं और साथ ही जानता हूं कि मेरे सुनने से पूर्व वायुमण्डल में एक विशेष क्रिया हुई है तो मेरा ज्ञान विज्ञान है । विज्ञान का काम अनुभवों को गठित करना अर्थात् उन के मध्य में भिन्न २ प्रकार के सम्बन्धों का स्थापन करना है यह काम बहुत बड़ा है इस लिये इसे भली प्रकार करने के लिये मनुष्य का मन श्रमविभाग के नियम पर अनुष्ठान करता है । वृक्ष अपनी जड़ों के द्वारा जलीय वा पार्थिव लाभ दायक परमाणुओं को खींच कर अपने शाखा पत्रों के द्वारा वायु में फैलाते हैं और जल को खींच कर वाष्प बना कर सूर्य को देते हैं तब वर्षा होती है । बद्दलों को स्तम्भित करते हैं वर्षने के लिये विवश करते हैं तब जल साधारण तल से नीचे चले जाते हैं जब पीपल के वृक्षादि अपनी जड़ों के द्वारा खींच कर सहस्रों मन जल सूर्य को देते हैं । जब पीपल पर न्यूतन किशलय फूटते हैं तब उसके नीचे पानी की बूंदें (बूदें) भी टपकने लग जाती हैं । यह फास्फोरस जो दिमाग में सोचने का काम देती है बहुत पैदा करता है । इस लिये बुद्ध मत ने इसको ज्ञान का वृक्ष कहा है । गीता में कहा है कि :—

"अश्वत्थः सर्व वृक्षाणाम्"

अश्वत्थ मेरा रूप है । और भी कहा है

दृष्ट्वा मुच्यते रोगैः स्पृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते ।
यदाश्रया चिरंजीवी तं अश्वत्थं नमाम्यहम् ॥

देख कर रोगों से छूटता है और स्पर्श कर पापों से तथा नीचे अनुष्ठान करने से चिरंजीवी होता है उस अश्वत्थ को प्रणाम करता हूं । मरण से पहले पीपल

का फल खाने से प्राणी वैकुण्ठ को जाता है । मुमूर्षु का अध्यास कफवात पित्त के साथ होता है जिस पदार्थ के सेवन से कफ अधिक बढ़े तब अधोगति होती है क्योंकि जल की निम्न गति है और अग्नि की ऊर्ध्व गति है । हिन्दु विज्ञान के अनुसार मरते समय जो वस्तुयें कफ को फाड़ कर अग्नि को दीपन करें जैसे तुलसीदल गंगा जल, पीपल का फल इत्यादि देने से मुमूर्षु को वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है । दाभ पर सुलाने से ऊर्ध्व गति कारी विद्युत् की सहायता मिलती है प्राणों का संगठन होता है दाभ के विषय में वेद में कहा है :—

नास्य केशान् प्रचपन्ति,
नोरसि ताड़ माघ्नते ।
यस्माच्छिन्न पत्रेण,
दर्भेण शर्म यच्छति ॥
(अथर्व)

अच्छिन्न पत्र कुश से जिस सिर पर जल छिड़का जाता है उस के बाल नहीं पकते और न दिल धड़कता है ।

जिस घर पर काली तुलसी लगी हुई होती है उस पर बिजली नहीं गिरती इसी प्रकार जिस मन्दिर पर त्रिशूल गड़ा हुवा हो मोर के पंख के झाड़े से वायु वा अग्नि सम्बन्धि बीमारी दूर होती है । मृगछाला पर प्राणायाम करने से बवासीर नहीं होता है । गौ के गोबर के लेपन से जर्म्ज (जर्मज) नहीं पैदा होते । गो मूत्र के सेवन से राज यक्ष्मा दूर होता है । गौ के दर्शन से पाप नष्ट होते हैं शंख की आवाज से हैजे और प्लेग के कीड़े दौड़ते हैं और कुछ मर जाते हैं ।

विज्ञान के द्वारा ज्ञात हुआ है कि प्रत्येक पदार्थ में विद्युत शक्ति है और वह दक्षिण से उत्तर को स्वाभाविक रौ की भान्ति बहती है जो दक्षिण की ओर पैर करके सोता है उस कि आयु का घटना अथवा बुरा स्वप्न आना सम्भव है । दोनों समय मिलने पर सोना और भोजन करना निषिद्ध है । मल मूत्र के वेगों के रोकने से रोग उत्पन्न होते हैं हवन के धूवें और विभूति से बीमारी दूर होती है । यूं तो पत्थर पर पानी डालकर पीना स्वास्थ्य दायक है ही, परन्तु गण्डिका नदी के सालिगराम जिन से सोना उत्पन्न होता है वा नरमदेश्वर महादेव पर चढ़ाया हुवा जल सब आधि (आधी) व्याधियों को विनाश करता है ।

अकाल मृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् ।
विष्णु पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

(एक विज्ञानी)